राष्ट्रीय सहारा देहरादून। रविवार • 3 नवम्बर • 2019 www.rashtriyasahara.com

पशु जिसमें खाते हैं वो नाद। चारा काटने की मशीन कूड़ा रखने वाला धूरा भी दीवाली के दीये से प्रकाशित हो जाता है। साल भर से उपेक्षित नदी, पोखर गंदे तालाब छठ के दिन जगमगा उठते हैं। इस देश की लोक संस्कृति ने प्रकृति और पर्यावरण को कैसे अपने साथ जोड़ा है, छठ इसका उदाहरण है।
अतुल कुमार राय, लेखक @AuthorAtul

डा. रमेश पोखरियाल 'निशंक'

विश्व का चमकता सितारा बनेगा भारत

इस सितम्बर, 2019 को ह्यूस्टन, संयुक्त राज्य अमेरिका में हाउडी मोदी कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के राष्ट्रपति के साथ एनआरजी स्टेडियम में जब अपने वृहद् भारतीय परिवार का परिचय कराया तो पूरा विश्व यकीन करने के लिए मजबूर हो गया कि भारत अपने गौरवशाली अतीत के वैभव को पाने के लिए कृत संकल्पित है। विभिन्न भाषा, रीति-रिवाजों और राज्यों का प्रतिनिधित्व करते पचास हजार से अधिक भारतीयों ने करतल ध्वनि के साथ संदेश दिया कि भारतीय संस्कृति का मूल आधार भावनात्मक एकता है। आज जब हम 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना करते हैं, तो उसी भावनात्मक एकता के दर्शन होते हैं। यही एकता हमारी शक्ति है। यही कारण है कि हजारों सालों के विदेशी आक्रमणों के बावजूद हमने हमारी पहचान नहीं खोई। इसीलिए मशहूर शायर इकबाल ने कहा है 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी'।

देखा जाए तो भारत आदिकाल से ही अनेकता में एकता की अनूठी मिसाल प्रस्तुत करता रहा है। हमने विविधता में एकता से न केवल भारत को जोड़ने की बात कही है अपितु वसुधैव कुटुंबकम का संदेश देकर पूरे विश्व को अपना परिवार माना है। विश्व बंधुत्व का संदेश देने वाला भारत दुनिया को अन्य देशों की तरह एक बाजार के रूप में नहीं देखता, बल्कि अपने परिवार का ही हिस्सा मानता है। स्वाधीनता आंदोलन में हमारी सफलता का मूल मंत्र भी हमारी एकता रही है। विविध क्षेत्रों के, विभिन्न भाषाओं के, रीति-रिवाजों के, विभिन्न आस्थाओं के लोगों ने एकजुट होकर संघर्ष किया और यही कारण रहा कि हम शक्तिशाली अंग्रेजी साम्राज्य को भारत से उखाड़ पाए। बिना किसी संसाधनों के, बिना हथियारों के विश्व के सबसे शक्तिशाली साम्राज्य को घुटने के बल झुकने पर मजबूर करना हमारी एकता की कहानी बयान करता है।

वर्ष 2015 में भारत सरकार द्वारा 31 अक्टूबर को प्रति वर्ष राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। 31 अक्टूबर ही वह दिन है जिस दिन भारत माता को लौह पुरुष सरदार पटेल जैसा हीरा मिला था। इस दिन भारत की वसुधा उस महानायक के प्रति हमारी कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिसने राष्ट्र की एकता एवं अखंडता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

हमारे दूरदर्शी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस बात को समझा कि आज की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में देश को केवल अमर भारतीय संस्कृति और परंपराओं के सहारे ही एक साथ किया जा सकता है, विभिन्न राज्य रूपी मोतियों को माला में पिरोने की क्षमता हमारी संस्कृति में ही है। इसी मकसद से मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत करीब 227 विश्वविद्यालयों और 450 स्कूलों में करीब एक हजार से ज्यादा सांस्कृतिक, क्राफ्ट और खेलकूद से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें करीब दो लाख बच्चे और पेरेंट्स सांस्कृतिक विरासत से रूबरू हुए। इसके अलावा, भाषा संगम के तहत कक्षा 1 से बारहवीं तक के छात्रों को हिंदी और अंग्रेजी के अलावा स्थानीय भाषाओं के बोलचाल के वाक्य सिखाए जा रहे हैं।

मैं मानता हूं कि 'भारत एक देश नहीं, बल्कि उपमहाद्वीप है, जिसके विभिन्न भागों में अलग-अलग रीति रिवाज और अलग-अलग परंपराएं हैं। विविधता के जितने दर्शन भारत में होते हैं, उतना शायद ही विश्व के किसी अन्य क्षेत्र में होते होंगे। यहां हर दस किलोमीटर पर बोली बदल जाती है, कुछ सौ मील दूर जाने पर परिधान बदल जाते हैं, भाषाएं बदल जाती हैं, और 1000 मील दूर जाने पर पूरी जीवन शैली ही पृथक नजर आती है पर इन सब के बावजूद हम सदियों से एकता के सूत्र में समावेशित हैं। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के माध्यम से राज्यों के बीच संबंधों को बढ़ावा देने से जहां एक ओर लोगों के दिलों में एक दूसरे के प्रति जुड़ाव हुआ है, वहीं दूसरी ओर शांति व सद्भावना का ऐसा वातावरण सृजित हो रहा है, जिससे नव भारत के निर्माण की परिकल्पना को साकार किया जा सकेगा।

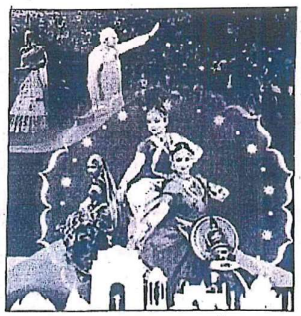

इसी के तहत संस्कृति मंत्रालय की ओर से गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश और दिल्ली समेत दस जगहों पर राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव आयोजित किए गए। इनमें शास्त्रीय, लोक संगीत, नृत्य और रंगमंच की प्रस्तुतियों के साथ ही क्षेत्रीय गायकों के जरिए अलग-अलग राज्यों को जोड़ने की कोशिश की गई। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत पर्यटन मंत्रालय की ओर से भारत पर्व और पर्यटन पर्व जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए जहां अलग-अलग राज्यों की संस्कृति के साथ ही वहां की कारीगरी को देखने का अवसर लोगों को मिला। देश के विभिन्न राज्यों के मध्य संस्कृति, परंपरा और भाषा की अनूठी साझेदारी के लिए यह कार्यक्रम एक वरदान है। आवश्यकता है कि हमें अपनी समृद्ध विरासत और विभिन्न योजनाओं को जन-जन तक ले जाने के लिए कृत संकल्पित होना पड़ेगा। चाहे वह साहित्यिक आयोजन हो, फूड फेस्टिवल हो, युवा शिविर हो, गायन-नृत्य पर आधारित आयोजन हो, हस्त कला या शिल्पकला की कार्यशाला हो, सर्वत्र हमें विभिन्न क्षेत्रों की गौरवमयी संस्कृति और परंपराओं के माध्यम से सबको राष्ट्रीय एकता के सूत्र में समावेशित करना है। सभी को एकता के एक ऐसे सूत्र में आबद्ध करना है, जिससे सब लोग राष्ट्र के समग्र विकास में अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए प्रेरित हो सकें।

नवाचार का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हुए और योजना को प्रभावशाली बनाने हेतु 29 नवम्बर, 2015 को सरकार द्वारा एक प्रतियोगिता प्रारंभ की गई जिसमें सभी देशवासियों के दृष्टिकोण, विचार और बेहतर सुझावों को आमंत्रित किया गया। इसका परिणाम रहा कि पूरे देश में उत्कृष्ट कार्यक्रमों के माध्यम से हम समस्त देशवासियों को 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के लिए अभिप्रेरित कर पाए हैं। आज इस बात की नितांत आवश्यकता है कि तमिल में 'पोंगल' मनाने वालों को पंजाबी की 'लोहड़ी' के बारे में पता हो। मणिपुर के 'याओशांग' के साथ 'गणेश चतुर्थी' के हर्षोल्लास को महसूस करने की आवश्यकता है। केरल के 'ओणम' की खुशबू को पंजाब और हरियाणा के मैदानों में बिखेरने की आवश्यकता है। छत्तीसगढ़ के सबसे लंबे चलने वाले 'बस्तर दशहरे' के उल्लास को असम के 'बिहु' और अरुणाचल के 'लोसर' के साथ समझने की आवश्यकता है। भारतीय नृत्य संगीत की परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। इस धरोहर को न केवल संरक्षित करने की आवश्यकता है, बल्कि पुष्पित, पल्लवित कर पूरे विश्व में ले जाने की आवश्यकता है। इस कार्यक्रम का प्रयास है कि भांगड़ा करने वाले भरतनाट्यम की महत्ता को समझ सकें, कुचिपुड़ी और मणिपुरी के साथ गरबा, लोहड़ी और घूमर जैसे प्रदेश विशेष के नृत्य देश के सभी भागों तक अपनी सांस्कृतिक पहचान बना सकें और सभी एक दूसरे की संस्कृति और कलाओं का सम्मान करें।

आज पूरा विश्व चुनौतियों से घिरा है। आतंकवाद, मौसम परिवर्तन, गरीबी, आर्थिक मंदी, सामाजिक-आर्थिक विषमता, ऊर्जा संकट और सबसे महत्वपूर्ण मानवीय मूल्यों में लगातार होती गिरावट उनमें प्रमुख हैं। ऐसी स्थिति में भारत को वैश्विक नेतृत्व प्रदान करना है। संपूर्ण मानवता की 18 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले भारत का वैश्विक शक्ति के रूप में अभ्युदय इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस प्रकार समन्वित राष्ट्र के रूप में विश्व के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का लक्ष्य यही है कि हम एक सशक्त, समृद्ध और वैभवशाली भारत का निर्माण करें जो संपूर्ण विश्व को नेतृत्व प्रदान कर सकें। इस चुनौतीपूर्ण युग में भारत पूरे विश्व में देदीप्यमान सितारे की तरह सबका पथ आलोकित करने की क्षमता रखता है। विश्व के युवा राष्ट्र के रूप में हम सृजनात्मकता, उद्यमिता, नवाचार, शोध एवं अनुसंधान का महत्वपूर्ण केंद्र बन सकते हैं। यह हमारी शक्ति है कि अमेरिकी जनसंख्या से अधिक हमारे विद्यार्थियों की संख्या है। देश के युवाओं को, विद्यार्थियों को सकारात्मक दिशा में प्रोत्साहित करने के लिए 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' जैसे कार्यक्रमों की विशेष भूमिका रहेगी। मुझे पूरा विश्वास है कि नव राष्ट्र निर्माण में, समृद्ध और शक्तिशाली भारत की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में, 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' उत्प्रेरक की भूमिका निभा रहा है।

(लेखक केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री हैं)

आज इस बात की नितांत आवश्यकता है कि तमिल में 'पोंगल' मनाने वालों को पंजाबी की 'लोहड़ी' के बारे में पता हो। मणिपुर के 'याओशांग' के साथ 'गणेश चतुर्थी' के हर्षोल्लास को महसूस करने की आवश्यकता है। केरल के 'ओणम' की खुशबू को पंजाब और हरियाणा के मैदानों में बिखेरने की आवश्यकता है। छत्तीसगढ़ के सबसे लंबे चलने वाले 'बस्तर दशहरे' के उल्लास को असम के 'बिहु' और अरुणाचल के 'लोसर' के साथ समझने की आवश्यकता है। भारतीय नृत्य संगीत की परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। इस धरोहर को न केवल संरक्षित करने की आवश्यकता है, बल्कि पुष्पित, पल्लवित कर पूरे विश्व में ले जाने की आवश्यकता है